3

पुरखाओं का काल

इब्राहीम के बुलाए जाने से मिस्र में जाने तक, 1921-1706 ई.पू. (उत्पत्ति 11:27-50:26)

परिचायक-इब्रानी लोगों का मिशन। -हम छुटकारा दिलाने वाले की पहली अस्पष्ट सी प्रतिज्ञा को देख चुके हैं (उत्पत्ति 3:15), जो कौम के लिए आशा की एक किरण थी। जल प्रलय से पहले होने और उसका कारण बनने वाली बातों से यह आशा लगभग धूमिल ही हो गई थी। जल प्रलय के बाद एक बार फिर आसमान धुंधला हो गया था। नील की सभ्यता तथा सम्राट मूर्तिपूजा का महत्व कम करने का केन्द्र बन गए थे। कहीं न कहीं, किसी न किसी का एक सच्चे परमेश्वर के समर्थन में आना आवश्यक था वरना मनुष्य जाति *निराशा* में ही नाश हो जाती। इब्रानी लोगों का यही सबसे बड़ा उद्देश्य था। कुछ समय तक, परमेश्वर हाम और यापेत जातियों के करीब से गुजरता रहा। वह बड़ी सामी जाति के पास से उस जाति की कसदी शाखा के एक परिवार को छोड़ उसके पास से गुजर गया। परमेश्वर के ज्ञान को बनाए रखने के लिए और प्रतिज्ञा किए हुए उस ''वंश'' के द्वारा *सब* जातियों को परमेश्वर की संगति में वापस लाना ही ईश्वरीय उद्देश्य है। इसके बाद दिलचस्पी लोगों के बजाय घटनाओं में होने लगी, *जिनमें* केवल कुछ का ही उल्लेख किया गया। पवित्र इतिहासकार ने सदियों की विशाल दूरी को प्रमुख घटनाओं की मुख्य-मुख्य बातों को बताया है। यहां से, दिलचस्पी मनुष्यों में केन्द्रित हो जाती है अर्थात यह इतिहास की मुख्य धारा एक ही जाति अर्थात इब्रानियों की ओर बहकर लगातार बढ़ती जाती है। इस काल की कहानी के बाद इब्रानियों के खानाबदोश पूर्वजों अर्थात चार महान पुरखों, इब्राहीम, इसहाक, याकूब और यूसुफ के जीवनों का वर्णन आता है।

I. इब्राहीम का जीवन (उत्पत्ति 11:27-25:10)

''विश्वासियों के पिता'' और इब्रानी जाति के संस्थापक के रूप में इब्राहीम हर युग का महान पात्र है। उसके जीवन को मुख्यत: दो भागों में बांटा जा सकता है: (1) भ्रमण, (2) हेब्रोन में स्थायी निवास।

1. भ्रमण। -*क. बचपन का घर।* -इब्राहीम प्राचीनतम एशियाई सभ्यता के केन्द्र ऊर का रहने वाला था। यह क्षेत्र पहले हाम वंशियों का था या तुरानियों का, परन्तु साम वंशियों की विजय के बाद ये लोग सामी ही कहलाने लगे थे। स्पष्ट है कि ये मूर्तिपूजक लोग

थे (तु. उत्पत्ति 11:31; यहोशू 24:2)।

ख. बुलाया जाना और वाचा (उत्पत्ति 12:1-3)। -यहां उसने अपने घर, रिश्तेदारों, देश को छोड़ने और उस देश को जिसे उसने अभी देखा नहीं था ढूंढ़ने की परमेश्वर की बुलाहट सुनी। धार्मिक तौर पर, मनुष्य के पाप में गिरने के बाद से यह बुलाहट और इसका परिणाम सबसे महत्वपूर्ण घटना थी। परमेश्वर ने इस बुलाहट को अपनी वाचा के साथ जोड़ दिया। इस बुलाहट में चार प्रतिज्ञाएं थीं: (1) एक बड़ी जाति की बात इब्रानी या यहूदी लोगों में पूरी हुई। (2) एक बड़ा नाम। अपने जीवनकाल में निमरोद और कैसर संसार के हिसाब से बहुत बड़ी हस्ती थे, परन्तु दोनों में से किसी की भी न तो इतिहास पर कोई छाप है और न ही वह कौम को या अपने आप को जीवन या विचारों से प्रभावित कर पाए। तीन प्रमुख धर्म अर्थात यहूदी, मसीही और मुहज़्मदन लोग इब्राहीम को विश्वासियों के पिता के रूप में देखते हैं। (3) एक देश: इब्रानी लोगों द्वारा कनान पर कज़्जा करने से पूरी हुई। (4) पृथ्वी के सब लोगों के लिए एक आशीष; दो हज़ार साल बाद मसीह में और पूरे संसार में सुसमाचार सुनाने से पूरी हुई। आज भी इस प्रतिज्ञा का क्षेत्र बढ़ता जा रहा है।

ग. दूसरे देश में जाकर बसना। -हर कौम कहीं न कहीं, किसी न किसी समय खानाबदोश रही होती है। परन्तु कुछ विस्थापन पूरी तरह से धार्मिक होते हैं, जो इब्रानी लोगों के इतिहास की तरह स्पष्ट प्रकाश डालते हैं। 75 वर्ष की आयु में, अपने रिश्तेदारों और कौम से नाता तोड़कर उस देश को जाना, जिसका उसे पहले बिल्कुल पता नहीं था, साहसपूर्ण विश्वास के बिना नहीं हो सकता था। ''विश्वास ही से इब्राहीम जब बुलाया गया तो आज्ञा मानकर ऐसी जगह निकल गया जिसे मीरास में लेने वाला था, और न जानता था, कि मैं किधर जाता हूं; तौभी निकल गया'' (इब्रानियों 11:8)। सदा तक रहने वाली एक जाति और एक महान सत्य अर्थात परमेश्वर की एकता के लिए जगह बनाने के लिए *ऐसा* ही आदमी उपयुज़्त था।

अपने पिता तेरह, अनाथ भतीजे लूत, और पत्नी सारा को लेकर वह फरात से हारान देश में चला गया। वहां तेरह की मृत्यु हो गई और इब्राहीम जो अभी भी परमेश्वर की बुलाहट को निष्ठापूर्वक से मान रहा था, कनान फरात की घाटी में से होते हुए देश के लिए रवाना हो गया। अब वह एक अजनबी देश में अर्थात पराई जाति के लोगों में है। शकेम में, परमेश्वर उसे दर्शन देता है और वाचा को फिर से दोहराता है, ''यह देश मैं तेरे वंश को दूंगा।''[1] इसका अर्थ यह हुआ कि प्रतिज्ञा किया हुआ देश यही है। विस्थापन पूरा होता है।

कुछ साल इब्राहीम इधर-उधर भटकता रहा। वह (1) बेतेल, (2) दक्षिण, (3) मिसर, (4) दक्षिण, (5) बेतेल में गया। यहां पर लूत और इब्राहीम अलग हो जाते हैं; लूत यरदन घाटी में सदोम की ओर अपने तज़्बू गाड़कर और सदोम में बस जाता है। (6) इब्राहीम दक्षिण में हेब्रोन में रहने लगा। परन्तु अन्त तक वह तज़्बुओं में ही रहा। इब्राहीम जहां भी रहा, उसने वहां परमेश्वर के लिए वेदी अवश्य बनाई। तज़्बू और वेदी कनान में उसके जीवन की मुज़्य विशेषता है।

2. हेब्रोन में स्थाई निवास। -इस काल की मुज़्य घटनाएं इस प्रकार हैं:

क. कसदियों का हमला।–कसदिया पर एलामी लोगों का राज था। इन महत्वाकांक्षी लोगों ने पराजित लोगों को यरदन घाटी में पश्चिम की ओर भगा दिया था। बारह वर्ष तक जुआ सहने के बाद यरदन के छोटे-छोटे राजाओं ने विद्रोह कर दिया था। कसदिया के एलामी शासक कदोर्लाओमेर ने विद्रोह को दबाकर सदोम के लोगों को जिसमें लूत भी था खदेड़ दिया था। तीन सौ अठारह कुशल सेवकों को लेकर इब्राहीम ने पीछा करके बंदियों को छुड़ा लिया था। मलकीसिदेक अर्थात उस रहस्यमयी याजक राजा ने जिसे इब्राहीम ने दशमांश दिया था, यहीं से वापस आते हुए मुलाकात करके उसे आशीष दी थी।

ख. हाजरा से विवाह।–कई वर्ष बीत जाने के बाद भी अभी तक प्रतिज्ञा किए हुए पुत्र का जन्म नहीं हुआ था। इब्राहीम और सारा बूढ़े हो रहे थे। सारा के सुझाव से इब्राहीम ने एक सहायक पत्नी के रूप में अपनी दासी हाजरा से विवाह कर लिया। बाद में वह इश्माइल की मां और अरबी लोगों की पुरखिन या पूर्वज बनी।

ग. खतने का आरज़्भ।–इब्राहीम निन्नयानवे साल का हो गया था। सारा उससे दस साल छोटी थी। परन्तु वाचा की प्रतिज्ञा अब तक पूरी नहीं हुई थी ज़्योंकि प्रतिज्ञा सारा के द्वारा थी और सारा के कोई पुत्र नहीं था। एक बार फिर परमेश्वर ने दर्शन दिया और उस वाचा को दो चिह्न देकर दोहराया: (1) उनके नाम, अब्राम (अर्थात उन्नत पिता) और सारै (अर्थात कलह-प्रिय) से, इब्राहीम (अर्थात बहुतों का पिता), और सारा (अर्थात राजकुमारी) रखे; (2) वाचा के लोगों के लिए खतने की रीति सदा की रीति के रूप में दी गई।

घ. सदोम का विनाश।–यरदन के मैदानी नगर लुचपन से भर गए थे, जिससे आस पास की जातियों के लिए संकट पैदा हो गया था। परमेश्वर ने उनके विनाश का आदेश दिया और उनका न्याय करने की बात इब्राहीम को बता दी जिसकी सिफारिश से ये नगर बचे तो नहीं, परन्तु पूरी तरह से नाश भी नहीं किए गए। उसके एक चिह्न के रूप में लूत को आग में से निकाल लिया गया, चाहे उसकी पत्नी सदोम पर पड़ने वाली आग और गंधक के तूफ़ान में फंस गई थी। लूत बचकर सोअर नामक स्थान में जा बसा और अपनी ही बेटियों के द्वारा मोआब और अमोन का पिता बना, जिनके वंशज इब्रानी लोगों के बड़े विरोधी रहे।

ङ. इसहाक का जन्म और बलिदान।–इब्राहीम अब एक सौ वर्ष का और सारा नज़्बे वर्ष की हो चुकी थी। पच्चीस वर्ष तक घूमते रहने और प्रतिज्ञा की प्रतीक्षा करने के बाद अब उसका पूरा होना निकट लगता है। सारा एक पुत्र को जन्म देती है जिसका नाम इसहाक रखा जाता है। परन्तु अभी भी दुखी करने वाली परीक्षा उनकी प्रतीक्षा करती है। इब्राहीम के विश्वास ने अपने सज़्बन्धियों और देश से प्रेम पर विजय पा ली। ज़्या वह अपनी ही संतान के प्रति मोह छोड़ पाएगा? उसे एक रहस्यमयी संदेश मिलता है, "अपने पुत्र को अर्थात अपने इकलौते पुत्र इसहाक को, जिससे तू प्रेम रखता है, संग लेकर मौर्य देश में चला जा; और वहां उसको ... होमबलि करके चढ़ा।"[2] ऐसी आज्ञा से हम अवश्य चौंक जाएंगे। ऐसा लगेगा कि कौन से दायित्व को पूरा किया जाए। लेकिन इब्राहीम को परेशानी नहीं हुई। उस समय नर-बलि देना सामान्य बात थी; उस युग में ऐसा आम होता होगा और निश्चित रूप

में इब्राहीम यह सब जानता होगा। *उसे* सोचना नहीं पड़ा। एक ओर परमेश्वर की पुकार थी तो दूसरी ओर इसहाक के लिए उसका प्रेम और वाचा की प्रतिज्ञा में उसकी आशा। उस प्रतिज्ञा के लिए उसने लोहे की खूंटी से अपने मन को खींचकर मना लिया था। जीत फिर विश्वास की ही हुई (इब्रानियों 11:17-19)। यहां पर हम इब्राहीम के विश्वास और अनुभव के चरम को देखते हैं। उसका पुत्र बच जाता है; ज़्योंकि परमेश्वर को वास्तव में उसके बलिदान की आवश्यकता नहीं थी। यह पुरखा उसके विवाहित होने, उसके दो बेटों के बड़े होने को देखने के लिए जीवित रहा। उसने सारा को हेब्रोन में मकपेला वाली गुफा में दफ़ना दिया जो प्रतिज्ञा किए हुए देश में एकमात्र ऐसी जगह थी जो उसकी अपनी थी। वहीं पर कनान में एक शताब्दी के विस्थापन के बाद इसहाक और इश्माइल ने उसे भी दफ़नाया था।

संसार में इब्राहीम जैसे लोग बहुत कम होते हैं। इसमें लूत जैसे लोग तो बहुत मिल जाएंगे जो अनन्त जोखिम उठाकर सांसारिक लाभ उठा लेते हैं। लूत और उसकी जाति प्रातः काल की ओस की तरह अलोप हो जाती है परन्तु इब्राहीम और उसके वंश ने संसार का भविष्य सदा-सदा के लिए संवार दिया।

II. इसहाक का जीवन और चरित्र (उत्पत्ति 24:1-28:9)

1. इसहाक के जीवन की विशेष बातें। -जल्द ही इसहाक के जीवन की कहानी बताई जाती है। उसकी कहानी एक ओर उसके पिता और दूसरी ओर उसके पुत्र याकूब के साथ-साथ चलती है। इसहाक के जीवन में इब्राहीम के पचहत्तर वर्ष और याकूब के एक सौ बीस वर्ष मिलते हैं। *उसके* जीवन की हर महत्वपूर्ण घटना *उनके* जीवन से अधिक अच्छी तरह जुड़ी हुई है। एक ऐतिहासिक पात्र के रूप में, उस पर वे दोनों हावी हैं। सहनशील और शांतिप्रिय इसहाक बलिदान के लिए अपने आप को पिता के सामने समर्पित करता है। वह स्पष्ट रूप से अपनी मां के जीवन से और बाद में अपनी पत्नी से प्रभावित होकर पलिश्तीन में खेतों के लिए लड़ने के बजाय उनमें काम करते हुए जीवन बिताता है। उसने एक सौ अस्सी वर्ष की अधिकतर आयु दक्षिण देश में हेब्रोन के निकट बिताई। उसके पास न तो इब्राहीम जैसा स्वभाव था और न याकूब जैसा प्रचण्ड अनुभव। फिर भी प्रतिज्ञा के एक पुत्र के रूप में और वाचा की प्रतिज्ञाओं के वारिस होने के नाते, उसका सम्मान उस काल के चार प्रमुख पुरखाओं में होता है। वह इब्राहीम की तरह विश्वास में चलता रहा और परमेश्वर इब्राहीम से की गई वाचा को दोहराने के लिए बार-बार उसे दर्शन देता रहा।

2. उसका विवाह और परिवार। -इब्राहीम का भाई नाहोर ऊर से परिवार के साथ या पीछे-पीछे फरात नदी या हारान तक गया होगा। मूर्तिपूजक कनानियों के साथ किसी तरह का कोई पारिवारिक समझौता न करने के भय से, इब्राहीम ने अपने सबसे विश्वसनीय दास को नाहोर के नगर में हारान देश में भेजा। वहां से वह बतूएल की पुत्री रिबका को लाया, जो इसहाक की पत्नी बनी और उसने दो जुड़वां पुत्रों एसाव तथा याकूब को जन्म दिया।

III. याकूब का इतिहास (उत्पत्ति 27:1-49:33)

उसके दो नामों और उसके स्वभाव के दो अलग-अलग पहलुओं से मेल खाते याकूब के जीवन के दो अध्याय हैं। पहले अध्याय में, वह याकूब (अर्थात अड़ंगा डालने वाला) है; दूसरे में वह इस्राएल (अर्थात परमेश्वर का राजकुमार) बन जाता है। विभाजक रेखा पनीएल नामक स्थान है जहां उसने स्वर्गदूत से कुश्ती की थी और दोनों ही विजयी हुए थे। मसीही मन परिवर्तन के रूपक के रूप में इस पुरखे के जीवन की घटना बहुत महत्वपूर्ण है। पहले से अंतिम पुरखे तक सबका जीवन विश्वास से भरपूर था। परन्तु राजकुमार इस्राएल अड़ंगा डालने वाले याकूब से बिल्कुल अलग था।

1. अड़ंगा डालने वाला याकूब (उत्पत्ति 27:1-32:32) -*क. उसका नाम।* -याकूब के जीवन की एक घटना से उसका नाम एड़ी पकड़ने वाला, लंगड़ी मारकर गिरा देने वाला व अड़ंगा डालने वाला रखा गया था। यद्यपि वह छोटा था परन्तु चुनी हुई परिवार रेखा और वाचा याकूब के द्वारा ही होनी थी; इसलिए उसके जन्म के समय ही यह पहले से बता दिया गया था कि ''बड़ा बेटा छोटे के अधीन होगा।''[3]

ख. छीना गया जन्माधिकार। -एसाव शिकारी था; जबकि याकूब ''शांत'' स्वभाव वाला पौधों की देखभाल करने वाला व्यक्ति था। एसाव शिकार खेलने से थककर आता है, याकूब की दाल खाने के लिए अपने पहलौठे होने का हक बेच देता है। इस प्रकार कुछ पल की संतुष्टि के लिए वह वाचा की आशीष को तुच्छ जानता है। सदा तक रहने वाली जाति या महान आत्मिक धर्म में ऐसा स्वभाव मेल नहीं खाता। ''शांत'' याकूब जन्म के अधिकार और वाचा की प्रतिज्ञा को महत्व देता है परन्तु बेईमानी से वह अपने भूखे मर रहे भाई से यह अधिकार ले लेता है।

ग. चुराई गई आशीष। -कई साल बीत गए। बूढ़े इसहाक ने पुरखा होने की आशीष देनी थी। दोनों लड़कों के जन्म के समय ईश्वरीय उद्देश्य बताए जाने के बावजूद वह एसाव को आशीष देने के लिए दृढ़ संकल्प था। परन्तु रिबका मरी नहीं थी। वह एक चालाकी करने के लिए कहती है और याकूब अपने नाम के अर्थ के अनुसार, उस योजना में उसका साथ देता है। चालबाज सफल हो जाता है। बूढ़े इसहाक की धुंधली आंखें और एसाव का वहां न होना युक्ति के अनुसार है, और इस पुरखे के हाथ याकूब के सिर पर आशीष रख देते हैं।

घ. हारान में जाना। याकूब के पाप का पहला असर उसे पिता व अपने भाई के सामने से, जिन्हें उसने धोखा दिया था और रिबका के पास से जो उस चाल में शामिल थी, जाना था। रिबका के सुझाव पर ही, इसहाक याकूब को हारान में उसके रिश्तेदारों के पास एक पत्नी ढूंढ़ने के लिए भेजता है। उसका जाना उदासी भरा था ज़्योंकि इसके पीछे बचपन की यादें, उसकी अपनी कमीनगी की परछाई और एसाव के बदला लेने का भय था; आगे ज़्या होगा, यह तो केवल परमेश्वर ही जानता था। रात पड़ जाती है। वह सितारों के नीचे खुले आसमान में सोने के लिए लेट जाता है। रात को नींद में दिन भर सोची जाने वाली बातें ही स्वप्न में होती हैं। उसने परमेश्वर को *बिल्कुल ही* नहीं छोड़ा; न ही परमेश्वर ने उसे छोड़ा।

सीढ़ी वाले दर्शन में परमेश्वर उस पर अपने आप को इब्राहीम के परमेश्वर, इसहाक के परमेश्वर और वाचा देने वाले परमेश्वर के रूप में प्रकट करता है और उस लाचार, झूठे व भगौड़े याकूब से इसके दूरगामी प्रबन्धों को नये सिरे से दोहराता है। भयभीत और विनम्र याकूब सुबह उठता है, पत्थर के तकिये को एक स्मारक बनाने के लिए लगाता है, इसे बेतेल अर्थात परमेश्वर का घर नाम देता है और वाचा बांधता है, जो याकूब जैसे प्रबन्ध के साथ है कि यहोवा ही उसका परमेश्वर होगा।

ङ *हारान में जीवन।*–हारान में याकूब अपने मामा लाबान के घर जिसने यह जानकर कि याकूब राहेल से भी विवाह कर लेगा (जिससे वह कुएं पर पहली बार मिलने के समय प्रेम करने लगा था), उसे अपनी बड़ी बेटी लिआ से विवाह के चक्कर में फंसाया, बीस वर्ष बनवास में गुज़र गए। अन्त में, ढेर सारी सज़्पज़ि और बहुत बड़ा परिवार लेकर वह अपने पुराने घर की ओर चल पड़ता है। कनान की पूर्वी सीमाओं के निकट आने पर उसे पता चलता है कि एसाव चार सौ पुरुषों को साथ लेकर उसकी ओर ही आ रहा है। एक बार फिर उसके अपने ही पापों की परछाई और उसके भाई का बदला उसके ध्यान में आ जाता है। अयोग्य और निर्बल होने का बोध उसे बहुत परेशान करता है। एसाव को शांत करने के लिए एक से एक अच्छी भेंट भेजी जाती है। परिवार यज़्बोक नदी पर चला गया। याकूब अकेला पनूएल में ही रह गया। वहां उसने सारी रात यहोवा के रहस्यमय संदेशवाहक से युद्ध किया। अन्त में अंधेरा छंट जाता है; भोर हो जाती है; हठी याकूब झुक जाता है। *तब* वह उस आशीष को पा लेता है जिसे पाने की उसकी लालसा थी, और अड़ंगा डालने वाला याकूब, इस्राएल बन जाता है।

2. राजकुमार इस्राएल।–इसके बाद याकूब एक नया मनुष्य बन जाता है। दोनों भाई मिलते हैं और शांति से अलग हो जाते हैं। फिर बहुत देर बाद, वे अपने पिता को गाड़ने के समय मिलते हैं। परमेश्वर की बुलाहट पर, इस्राएल बेतेल में जाता है। उसकी प्रिय पत्नी राहेल की बैतलहम के निकट बिन्यामीन को जन्म देते समय मृत्यु हो जाती है। उसके पुत्र आपसी लड़ाई-झगड़े से उसका मन दुखी करते हैं। प्रिय राहेल का प्रिय पुत्र यूसुफ उससे बीस वर्ष के लिए छिन जाता है। मिसर का अजनबी हाकिम बिन्यामीन को लाने के लिए कहता है परन्तु इस सब के दौरान इस्राएल पर यहोवा का हाथ बना रहता है। इस दौरान हर जगह वह उसकी वेदी बनाता, और इब्राहीम और इसहाक से वाचा बांधने वाले परमेश्वर को पुकारता है। निर्वासन, तंगी और वाचा की आशा का उनके स्वभाव पर असर होता है। याकूब इस्राएल बन चुका है और इस्राएल दयालु, सुन्दर और परिपज़्व हो चुका है। अन्त में बादल छंटते हैं। यूसुफ और बिन्यामीन उसे वापस मिल जाते हैं। जीवन का सूर्य मिसर में शांति से ढल जाता है और उसकी हड्डियां हेब्रोन में अपने पुरखों की कब्र में अपने पिता के साथ विश्राम करती हैं।

IV. यूसुफ का इतिहास (उत्पज़ि 37:1-50:26)

परिचायक।–इब्राहीम, इसहाक और याकूब से यूसुफ का सज़्बन्ध इब्रानी लोगों से

अलग है। वे पूर्ण वाचा के लोगों के वंशज हैं! और यूसुफ वह इस्राएल के बारह पुत्रों में से केवल एक जिसमें गर्भस्थ कौम बड़ी होती है। भावी कौम अपने आप को यूसुफ नहीं, बल्कि इस्राएल कहला सकती है। यूसुफ वाचा के लोगों का प्रमुख नहीं है, और वाचा को दोहराने के लिए बुज़ुर्ग पुरखाओं की तरह परमेश्वर उसे दर्शन नहीं देता। तो भी वह और उसके भाई पुरखाओं के काल के हैं और उनकी गिनती पुरखाओं में ही होती है (प्रेरितों 7:8, 9)। यूसुफ की कहानी सबसे दिलचस्प है और उसका स्वभाव पुराने नियम के इतिहास के किसी भी व्यक्ति से अच्छा है। उसमें बूढ़े पुरखाओं के कुछ सबसे अच्छे गुण हैं जैसे इब्राहीम की सामर्थ का निर्णय, इसहाक का धैर्य और कोमलता, याकूब का कोमल स्नेह और उन सबका विश्वास। उसके जीवन को दो अध्यायों में बांटा जा सकता है: (1) कनान में उसका यौवन; (2) मिसर में उसका पौरुष।

1. कनान में उसका यौवन। –इस काल की घटनाओं का दो तथ्यों द्वारा वर्णन किया जाता है:

क. उसके पिता का पक्षपात। –वह उसके बुढ़ापे का पुत्र, राहेल की पहलौठी संतान और उसके पहले प्रेम जिसे वह अपनी वास्तविक पत्नी के रूप में मानता था, की निशानी थी। नि: संदेह इसका दूसरा कारण यूसुफ का अपना स्नेही चरित्र था। याकूब का उसके प्रति मोह कई तरह से दिखाया गया है जिसमें विशेष तौर पर एक बहुरंगा (या लज़्बी आस्तीन वाला) राजकुमारों जैसा कोट था जो शायद इस बात का संकेत था कि वह जन्माधिकार उसी को देना चाहता था। इसका असर शीघ्र ही उसके प्रति बड़े भाइयों की ईर्ष्या में देखा गया। यूसुफ पर इसका कोई फर्क न पड़ने से उसके स्वभाव की विशेष सामर्थ का पता चलता है, ज़्योंकि भूख के बजाय अधिक खाने वाले का चरित्र अधिक बिगड़ता है। लगता नहीं कि यूसुफ द्वारा बाद में दिखाया पौरुष उसे अपने पिता के डेरे में रहते समय निराशाजनक माहौल में मिला होगा।

ख. भाइयों की घृणा। –यूसुफ के प्रति भाइयों की घृणा उसके दो स्वप्नों के कारण थी। एक स्वप्न में उनके पूले उसके सामने झुके थे; दूसरे स्वप्न में उसके सज़्मान में सूर्य, चांद और ग्यारह सितारे झुके थे जो उनके लिए इस बात का सबूत था कि वह जन्माधिकार मिलने की आस लगाए बैठा है। द्वेष घृणा का कारण बनता है और घृणा हत्या का। उन्हें यह अवसर तब मिला जब याकूब हेब्रोन में अपने कबायली घर से यूसुफ को अपने भाइयों के पास भेजता है जो शकेम में अपनी भेड़ों के झुंडों को चरा रहे थे। ''देखो वह स्वप्न देखनेहारा आ रहा है। सो आओ, हम उसको घात करके किसी गड्ढे में डाल दें, ... फिर हम देखेंगे कि उसके स्वप्नों का ज़्या फल होगा।''[4] रूबेन जो उसे बचाकर पिता के पास पहुंचाना चाहता था, उसे एक गड्ढे में डालने का सुझाव देता है। रूबेन की अनुपस्थिति में, यहूदा के सुझाव पर, यूसुफ को मिसर की ओर जाने वाले व्यापारियों के एक दल के हाथ बेच दिया जाता है। उस घृणित कोट को बालक के लहू से लथपथ देख पिता को मानना पड़ता है कि उसका प्रिय पुत्र यूसुफ जंगली जानवरों का शिकार हो गया है। पारिवारिक अपराध और शोक के दृश्य का पर्दा गिर जाता है।

2. मिसर में उसका पौरुष। –*क. दास के रूप में उसका जीवन।*–फिरौन के हाकिम पोतीपर के सेवक के रूप में, अपनी योग्यता और वफ़ादारी शीघ्र ही वह अपने स्वामी के घर का प्रधान बन जाता है। परन्तु उसकी यही योग्यता उसके लिए ख़तरा बन जाती है। पोतीपर की पत्नी के झूठे आरोप के कारण उसे जेल में डाल दिया जाता है।

ख. जेल में उसका जीवन।–यूसुफ निराश होकर बैठने वाला व्यक्ति नहीं है। बहादुरी से जेल की सलाखों के पीछे भी लोगों की सहायता करते हुए वह फिर से भरोसा हासिल कर लेता है। दो साथी कैदियों के स्वप्नों का अर्थ बताने के बाद उसे फिरौन के स्वप्नों का अर्थ बताने के लिए बुलाया जाता है। यह पृथ्वी के सबसे वैभवशाली राज्य की राजसी शक्ति पाने के लिए एक कदम साबित होता है।

ग. महल में उसका जीवन।–मिसर के हाकिम के रूप में, यूसुफ फिरौन के स्वप्नों के अर्थ बताकर आने वाले सात वर्षों के अकाल के लिए सात वर्ष तक के लिए बहुत सा अनाज इकट्ठा कर लेता हैं। अनाज की बहुतायत का समय समाप्त हो जाता है और अकाल के वर्ष शुरू हो जाते हैं और अनाज लेने के लिए यूसुफ के भाई भी वहां आ जाते हैं। अब मौका यूसुफ का है। वह उन्हें जासूस कहकर पकड़ लेता है। शिमोन को बंधक बनाकर, दूसरों को छोड़ देता है परन्तु कहता है कि जब तक वे बिन्यामीन को नहीं लाते वह उनसे भेंट नहीं करेगा। बुज़ुर्ग पुरखा पहले तो बिन्यामीन से अलग होने से इन्कार करता है लेकिन भूख सब कुछ करा देती है, और अन्त में यहूदा की जामिनी पर कि वे उसके लड़के को वापस ले आएंगे, वह मान जाता है। उनके दूसरी बार जाने पर, यूसुफ बिन्यामीन के बोरे में अपना कटोरा रख देता है और अपने भाइयों पर चोरी का आरोप लगाता है। फिर, सब कुछ समझ जाने पर, जब वे अपनी मुसीबतों का सम्बन्ध कई साल पहले किए गए अपने अपराध से जोड़ते हैं, और अन्त में यहूदा, बिन्यामीन के स्थान पर अपने आप को गुलाम के रूप में प्रस्तुत करता है, तो यूसुफ उन पर अपना आप प्रकट कर उनका अपराध क्षमा कर देता है। याकूब को वहां लाया जाता है और यह काल मिसर में वाचा के लोगों के साथ समाप्त हो जाता है। परन्तु, मिसर में यूसुफ के मरने और गाड़े जाने के बावजूद, उसकी अन्तिम इच्छा (उत्पत्ति 50:24, 25) से पता चलता है कि वाचा की प्रतिज्ञाओं और अपने लोगों के भविष्य में उसका विश्वास अटूट था।

यूसुफ का स्वभाव अलग ही है। उसे हर परीक्षा से गुज़रना पड़ा जिसमें अपने पिता के पक्षपात, भाइयों के द्वेष और उनके द्वारा कष्ट सहने, एक गलत स्त्री द्वारा उससे दुष्कर्म करने के अनुरोध, दुष्ट लोगों को मिलने वाला दण्ड, अचानक महिमा और सज़ा मिलना, हर गलती का बदला लेने का अवसर उसके जीवन के संवेदनशील अनुभव थे। किसी आदमी की कभी इतनी बड़ी परीक्षा नहीं ली गई थी और न कभी किसी ने इतनी विजय पाई होगी। क्षमा के मनुष्य जाति के इतिहास में वह सबसे शानदार उदाहरण है; इब्राहीम भी अपने विश्वास में उसके जितना विजयी नहीं हुआ। तो फिर यूसुफ के बजाय, इब्राहीम को ''विश्वासियों का पिता'' होने का सम्मान क्यों दिया जाता? स्पष्ट तौर पर इसलिए क्योंकि इब्राहीम ''विश्वास के समुद्र का कोलम्बस'' था। वह समुद्र के अज्ञात मार्गों में, एक

अजनबी देश की ओर निकला था। यूसुफ तो इब्राहीम, इसहाक और याकूब द्वारा बनाए गए मार्ग पर ही चला था।

V. अय्यूब की पुस्तक

अय्यूब की पुस्तक का सम्बन्ध इसी काल से है। ऐसा नहीं कि यह पुस्तक सदियों पहले लिखी गई थी; बल्कि इसकी घटनाएं, दृश्य, परिस्थितियां और पूरी शैली ही पुरखाओं के युग की हैं। अय्यूब एक शक्तिशाली पूर्वी प्रधान है जिसकी सम्पत्ति और संतान तक छीनने और उसे एक घृणित बीमारी से पीड़ित करने की परमेश्वर ने शैतान को अनुमति दे दी। तीन मित्र उसे सांत्वना देने के लिए आते हैं। पुस्तक का मुख्य भाग अय्यूब, एलीपज, बिलदद और सोपर नामक उसके तीन मित्रों, एलीहू नामक पास खड़े एक व्यक्ति और यहोवा के बीच हुई कविता रूपी बहस है। अय्यूब अपनी एकाग्रता को बनाए रखता है और अन्त में उसे पहले से दोहरी सम्पन्नता मिलती है। यह पुस्तक सम्भवत: पुरखाओं के इतिहास का आदर्श रूप है। काव्यमय विस्तार और सजावटों के बावजूद इसका आधार ऐतिहासिक है। घटनाओं का नाटकीय ढंग से एक दूसरे से जुड़े होना, बहुत अधिक विस्तृत और काव्यमय भाषा इस विचार की ओर ध्यान दिलाते हैं। बहस का विषय बुराई की समस्या अर्थात स्वभाव के साथ विपत्ति का सम्बन्ध है; इसका उद्देश्य लोगों को हर बात में परमेश्वर पर भरोसा रखना सिखाना है।

नोट।
पुरखाओं के युग की कुछ विशेष बातें।

1. यह खानाबदोशी का काल था। –इब्राहीम, इसहाक और याकूब ने मीनस, निमरोद और अश्शूर की तरह नगरों की नहीं बल्कि एक जाति और एक विश्वास की स्थापना की थी। वे तम्बुओं में रहते थे। वे एक से दूसरी जगह जाते थे। फिर भी वे लक्ष्यरहित या व्यवस्थाहीन घुमक्कड़ नहीं थे; बल्कि वे *परदेशी* थे जो एक बहुत बड़े, दूरंदेशी उद्देश्य की प्रेरणा से परमेश्वर की बुलाहट से भ्रमण करते थे।

2. यह पुरखाओं का युग था। –पिता *(क) परिवार का मुखिया होता था।* जीवन और मृत्यु पर उसे अधिकार होता था (देखिए उत्पत्ति 22:10; 28:24)। *(ख) सेनानायक।* –इब्राहीम मैसोपोटामिया की ओर जाने में अगुआई करता था। *(ग) परिवार का याजक।* – वह वेदी बनाता और परिवार के लिए बलिदान भेंट करता था। *(घ) परिवार का भविष्यवक्ता।* –परमेश्वर उसके लिए और उसके द्वारा अपनी इच्छा और अपने उद्देश्यों को प्रकट करता है।

3. परमेश्वर की धारणाएं। –पुरखे *(क) परमेश्वर की एकता* को दृढ़ता से थामे रखते थे। उस समय के किसी प्रकार के बहुदेववाद के होने का संकेत नहीं मिलता। सर्वेश्वरवाद का कोई स्पर्श नहीं है न ही प्रकृति की पूजा की कोई बात है जिसकी मिसर में बहुतायत थी। *(ग) परमेश्वर की सर्वव्यापकता।* वह सारे संसार का परमेश्वर है (उत्पत्ति 18:25) अर्थात वह केवल इब्राहीम और इसहाक का ही नहीं बल्कि फ़िरौन का भी

परमेश्वर है; वह यरदन पर ही नहीं बल्कि नील और फरात पर भी राज करता है। *(घ) परमेश्वर की पवित्रता।* उसे अन्यजातियों के देवताओं में पाई जाने वाली बुराइयां बदनाम नहीं कर सकतीं। सारे संसार का न्याय करने वाला धर्म से न्याय करेगा (उत्पत्ति 18:25)।

4. आराधना के ढंग। –उस समय मन्दिर या पर्व नहीं होता था; न ही सब्त के मनाए जाने का कोई संदेश था, यद्यपि बाद में मूसा की व्यवस्था में सृष्टि के समय से सातवें दिन परमेश्वर के विश्राम की बात और समय के सप्ताहों में बंटने के संकेत अवश्य हैं (उत्पत्ति 8:10–12)। उस समय कच्ची वेदियां, पशुओं का बलिदान, पवित्र स्मारक, मन्नतें, यात्राएं, प्रार्थनाएं, दशमांश और खतने की रीति अवश्य थी।

5. सभ्यता का स्तर। –पुरखे खानाबदोश तो थे परन्तु असभ्य नहीं थे। वे उस समय की कसदिया और मिसर की संसार की सबसे बड़ी सभ्यता के सम्पर्क में थे। वे चरवाहे थे, परन्तु खेती–बाड़ी भी करते थे। उनके पास धन और गहने भी थे; यहूदा के पास मुहर वाली अंगूठी थी और यूसुफ के पास राजकुमारों वाला कोट; और ऐसा नहीं हो सकता कि वे नील और फरात घाटियों में उस समय विकसित हुई लिखने की कला से परिचित न हों।

6. वाचा का महत्व। –पुरखाओं के काल और पूरे इब्रानी इतिहास के लिए इब्राहीम की वाचा प्रमुख है। इसमें कोई संदेह नहीं कि कहानी पूरी तरह से मानवीय है। भ्रमणों और परिवार और उनके कौमी जीवन में सभी स्वाभाविक उद्देश्यों का अपना–अपना योगदान है। परन्तु सब में *रचनात्मक* तथ्य और बल वाचा ही है। इसी के कारण इब्रानी लोग संसार के दूसरे लोगों से अलग बने। इसी से उन्हें एक देश की ओर चलते रहने अर्थात उस कौम और ''वंश'' की राह देखने में अगुआई मिली जिससे सब जातियों को आशीष मिलनी चाहिए। मूल रूप से कसदिया में इब्राहीम के साथ की गई वाचा की कनान में उसके साथ पांच से छह बार पुष्टि की गई तथा इसहाक और याकूब के साथ बार–बार दोहराई गई। यूसुफ ने अपनी अंतिम इच्छा इसी के आधार पर बताई थी; जबकि जलती हुई झाड़ी में सदियों बाद मूसा के साथ यह दोहराई गई और राष्ट्रीय वाचा के रूप में सीनै पर इसे विस्तार दिया गया। किसी व्यक्ति या लोगों के चरित्र पर ऐसे विश्वास और आशा की सृजनात्मक सामर्थ को मापा नहीं जा सकता।

पाद टिप्पणियां

[1]उत्पत्ति 12:7. [2]उत्पत्ति 22:2. [3]उत्पत्ति 25:23. [4]उत्पत्ति 37:19, 20.